नालन्दा कालीन मन्दिर समूह : एक अध्ययन

शोध छात्र
रोहित कुमार गुप्ता
प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

भारतीय धर्मों में (सनातन धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, सिख धर्म आदि) हिन्दुओं के उपासना स्थल को मन्दिर कहते हैं। यह अराधना और पूजा–अर्चना के लिए निश्चित की हुई जगह या देवस्थान है। यानी जिस जगह किसी आराध्य देव के प्रति ध्यान या चिंतन किया जाए या वहाँ मूर्ति इत्यादि रखकर पूजा–अर्चना की जाये उसे मन्दिर कहते हैं। ठीक इसी प्रकार नालन्दा के उत्खनन के परिणामस्वरूप विहारों की पंक्ति के पश्चिम दिशा में मन्दिरों के अवशेष प्राप्त हुए है जिनकी संख्या चार है जिसे पुरातत्व विभाग ने मन्दिर स्थल संख्या 3, 12, 13 एवं 14 नाम दिया है। इसके अतिरिक्त दो अन्य मन्दिर, मन्दिर स्थल संख्या–2 एवं सरायटीला मन्दिर भी खोदे गये है। जो विहारों की पंक्ति के पूर्व दिशा की तरफ स्थित है। इन मन्दिरों के उत्खनन से स्पष्ट होता है कि इन्हें समय के साथ–साथ कई बार वृहद् रूप दिया गया है। इनके अवलोकन से चीनी यात्रियों द्वारा वर्णित वास्तुकला के वैभव की झांकी मिल जाती है तथा 5वीं–6वीं शताब्दी से लेकर 10वीं शताब्दी के वास्तु इतिहास का पता चलता है।[1] मन्दिर स्थल संख्या–3 को सात बार पुननिर्मित किया गया जिससे इसका आकार वृहद होता गया तथा अन्तिम पुनर्निर्माण के उपरांत इस मन्दिर की ऊँचाई 50 फीट तक पहुँच गयी।[2]

मन्दिर स्थल संख्या 12, 13 एवं 14 भी उल्लेखनीय है और यह मन्दिर गुप्तकाल में ही नालन्दा में 'पंचायतन मन्दिर' के आदर्श को दर्शाते हैं। गुप्तकालीन हिन्दू मन्दिरों की तरह इन बौद्ध मन्दिरों में भी पोर्च (ड्योढी) का निर्माण किया गया है। साथ ही साथ लोक जीवन के स्वस्थ्य एवं मनोरंजन चित्र उत्कीर्ण है जो लोककला के परिष्कृत उदाहरण है। इन मन्दिरों के अतिरिक्त इसी कतार में दो अन्य मंदिर भी है जो इसी मन्दिर की योजना के आधार पर बनाये गये हैं।

बौद्ध मन्दिरों की पश्चिमी कतार के अलावा एक और बौद्ध मन्दिर का उत्खनन किया गया है जिसे सरायटीला के मन्दिर के नाम से जाना जाता है। यह मन्दिर भी बौद्ध मन्दिरों की योजना के अनुरूप ही बनायी गयी है, परन्तु इस मन्दिर की एक महत्वपूर्ण विशेषता यहां से रंगीन चित्रकारियों का प्राप्त होना है। उत्खनन के फलस्वरूप नालन्दा से एक हिन्दू मन्दिर का अवशेष भी मिला है, जिसे पत्थरघट्टी के मन्दिर के नाम से भी जाना जाता है। पुरातत्व विभाग ने इसे मन्दिर स्थल

संख्या–2 नाम दिया है। यह मन्दिर आयताकार है तथा केवल इसका अधिष्ठान ही शेष है। यह मन्दिर प्रारम्भ में ईंटों का बना था, परंतु कालान्तर में इसे पत्थरों द्वारा निर्मित किया गया। इसीलिए इसे पत्थरघट्टी मन्दिर कहा जाता है।

मन्दिर स्थल 3 :–

यह मन्दिर एक विशाल और ठोस इमारत है जो खुले आँगन के मध्य में खड़ी है। जिसका सर्वप्रथम उत्खनन स्पूनर द्वारा 1917–18 ई0 में सम्पन्न हुआ। उत्खनन से ज्ञात हुआ कि इस मन्दिर को विभिन्न कालों में सात बार एक–दूसरे के ऊपर निर्मित किया गया है जिससे इसका आकार वृहद् होता गया तथा अन्तिम पुनर्निर्माण के उपरान्त इस मन्दिर की ऊँचाई 50 फीट तक पहुँच गयी। इस मन्दिर के पवित्र अवशेषों की खोज हेतु 1925–26 ई0 में इसके छत से लेकर सतक तक 1.30 मीटर गहरी खुदाई हुई, परन्तु यहां से कोई अवशेष प्राप्त नहीं हुआ। सम्भवतः स्तूप के जर्जर हो जाने पर उसके पवित्र अवशेषों को वहां से हटा दिया गया होगा। नालन्दा के पुरावशेषों में यह मन्दिर सर्वाधिक भव्य, आकर्षक, विशाल एवं ठोस इमारत है। मन्दिर की ऊँचाई 10 मीटर तथा ऊपरी भाग की चौड़ाई 21.35 मीटर है। कनिंघम ने इस मन्दिर की पहचान ह्वेनसांग द्वारा उल्लिखित उस स्थान से की है, जहां तीन महीनें तक भगवान बुद्ध ने उपदेश दिया था।[3] बाद में उनकी स्मृति में, उस दौरान काटे गये उनके नसों एवं बालों के ऊपर उसी स्थान पर स्तूप का निर्माण किया गया। जबकि सी.एस. उपासक ने इस स्तूप या मन्दिर की पहचान भगवान बुद्ध के प्रधान शिष्य धर्मसेनापति सारिपुत्र की अस्थियों पर बनवायें गये स्तूप से की है।[4] यह मन्दिर नालन्दा से प्राप्त वास्तु अवशेषों में सबसे प्राचीन है, परन्तु इसका काल निर्धारण अभी तक नहीं हो पाया है, क्योंकि साक्ष्यों का अभाव है लेकिन साहित्यिक साक्ष्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि नालन्दा से सारिपुत्र के अस्थि अवशेषों पर स्तूप का निर्माण किया गया था तथा बाद में मौर्य सम्राट अशोक ने वहां पर मन्दिर का निर्माण करवाया था, परन्तु जिस स्थान पर यह निर्माण हुआ था, उस स्थान का निर्धारण करना कठिन है।[5] मन्दिर स्थल संख्या 3 के विभिन्न कालों का विवरण निम्नलिखित है :–

- उत्खनन से प्राप्त अवशेष अत्यन्त गहराई में दबे तथा वास्तुकला की दृष्टि से महत्वहीन थे तथा प्रथम स्तूप, द्वितीय स्तूप व तृतीय स्तूप काफी जर्जर स्थिति में थे। अतः पुराविदों ने उन्हें पुनः ढंक देना उचित समझा।[6] प्रारम्भ के दोनों स्तूप वर्गाकार थे, जबकि तीसरा स्तूप

आयताकार था। तीसरा स्तूप के अधिष्ठान से सटा हुआ, कंक्रीट से बना, एक छोटा चबूतरा था। सम्भवतः जो किसी मूर्ति का पादपीठ हो।

- चौथे स्तूप के बाद पांचवा, छठवां तथा सातवां स्तूप एक दूसरे के ऊपर निर्मित है तथा नीचे के प्रथम तीन स्तूपों से काफी वृहद् है। इनकी पहचान आज भी संभव है। पांचवा स्तूप काफी सुरक्षित तथा अलंकृत दशा में है। जिसके चारों कानों पर एक–एक बुर्जों का निर्माण किया गया था, जिनमें भगवान बुद्ध तथा बोधिसत्वों की गच की सुडौल मूर्तियां स्थापित थी।[7] इस स्तूप मे उद्देशिका स्तूप निर्मित थे। उद्देशिका स्तूप के निर्माण में ईंटों का प्रयोग हुआ है। जिस पर बौद्ध मन्त्र खुदे थे। सम्भवतः यह पूजा गृह रहा होगा तथा ईंटों पर अंकित बौद्ध मंत्रों को पढ़कर लोग अपनी मनोकामना पूर्ण होने की प्रार्थना करते होंगें। ईंटों पर खुदे बौद्ध मंत्र जिनका समय छंठी शताब्दी निर्धारित किया गया है। गुप्तकाल शैली में निर्मित गच की मूर्तियों का निर्माण भी इसी समय किया गया था। इस आधार पर पांचवें स्तूप की तिथि भी छंठी शताब्दी निर्धारित की जा सकती है। मलबे का अंबार जिस पर पांचवा मन्दिर बना था बहुत बड़ा है। इससे सिद्ध होता है कि पहले मन्दिर की नींव अवश्य ही कम से कम दो सदियां पहले रखी गयी होगी।
- पांचवे स्तूप के ऊपर निर्मित छठें स्तूप के अध्ययन हेतु सातवें स्तूप को दक्षिण से उत्तर दिशा की तरफ काटकर उसकी सीढ़ियों सहित कुछ हिस्से को अनावृत्त किया। छठें स्तूप के जीर्णावस्था को प्राप्त होने के बाद उसे बिना क्षति पहुंचाए उसके ऊपर सातवें स्तूप का निर्माण किया गया है। छठें स्तूप की सीढ़ियों के ऊपर सातवें स्तर की एक ऊँची दीवार निर्मित है, जिसको सांचे में ढली मूर्तियों की तीन कतारों से सजाया गया है।[8] स्तूप की संरचना में महत्वपूर्ण स्थान स्तम्भों का था, क्योंकि इसके उत्तरी सतह से एकाश्मक स्तम्भों की पंक्ति प्राप्त हुई थी।[9] सातवां स्तूप वर्गाकार था जिसकी माप 36.60x36.60x24.40 मीटर थी।[10] स्तूप के सबसे ऊपरी सिरे पर देवालय निर्मित था, जहाँ भगवान बुद्ध की विशाल मूर्ति स्थापित की गयी थी। इसकी पुष्टि देवालय के गर्भगृह में पड़े मूर्तिपीठ से होती है।[11] गर्भगृह में स्थापित बुद्धमूर्ति सम्भवतः गच की बनी थी।[12] मन्दिर स्थल संख्या–03 के सातवें स्तूप के फर्श को अनावृत्त करने पर एक चबूतरा मिला जिससे सटी एक दीवार तथा उससे सटी एक नाली प्रकाश में आयी है। वर्तमान में वर्षा के जल के निस्तारण हेतु पुरानी नाली की जगह पुरातत्व विभाग द्वारा नयी नाली का निर्माण किया गया है, फिर भी पुरानी नाली का कुछ भाग अभी शेष है जिससे इसकी बनावट को देखा जा सकता है।

इस प्रकार इस सम्पूर्ण स्तूप के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि यह अपने समय की भव्य रचना थी। वर्तमान में इसका 24 मीटर ऊँचा शिखर उस समय और भी ऊँचा रहा होगा। इसके सभी स्तर के स्तूपों का भूविन्यास अण्डाकार न होकर वर्गाकार या आयताकार है जो इन स्तूपों की एक विशेषता है।

मन्दिर स्थल 12 :–

नालन्दा के स्मारकों में सबसे विशाल मुख्य मन्दिर का वर्णन किया जा चुका है। अब इसके उत्तर में स्थित मन्दिर स्थल 12 का वर्णन किया जाता है। 1861 ई0 में कनिंघम ने इस मन्दिर की पहचान बालादित्य द्वारा बनवाये गये मंदिर से की थी।[13] इसका प्रथम उत्खनन सन् 1871–72 ई0 में बिहार शरीफ के तत्कालीन एस.डी.आ.ए.एम. ब्रोडले द्वारा कराया गया।[14] ब्रोडले हाथ कराया गया उत्खनन अवैज्ञानिक था तथा इस उत्खनन से इस मन्दिर के वास्तु अवशेषों को बहुत हानि पहुंची। उत्खनन के दौरान ब्रोडले को यहां से एक प्रस्तर लेख मिला था जो पाल शासक महिपालदेव के 11वें राज्यवर्ष का है। अभिलेख के अनुसार अग्निकाण्ड के बाद इस मन्दिर का पुनर्निर्माण बालादित्य नामक किसी व्यक्ति ने कराया था। इस मंदिर का पुरातात्विक उत्खनन एम. एच. कुरैशी एवं जी.सी. चन्द्र के निर्देशन में 1930–32 ई0 में सम्पन्न हुआ।[15] उत्खनन के फलस्वरूप एक विशाल मन्दिर के अवशेष प्रकाश में आए जिसे अलग–अलग कालों में, एक के ऊपर एक दो बार निर्मित किया गया था, अर्थात दूसरे काल का मन्दिर पहले काल के मन्दिर पर बनाया गया था। ताखों और अर्ध स्तम्भों की बहुतायत से मुख्य मन्दिर बहुत आकर्षक और मनोहर दिखाई देता है। बाहर से मन्दिर का विन्यास प्रायः चौपहल है, अर्थात लम्बाई में 170 फुट और चौड़ाई में 165 फुट है। पहले मन्दिर पर आरोपित दूसरा मन्दिर भी चौपहल है परन्तु इसका बाह्य शरीर सादा और बगैर ताखों और अर्धस्तम्भों की सजावट के हैं। बड़े मन्दिर के गर्भगृह तथा कोनों पर बने छोटे मन्दिरों की दीवारों के बाहरी माथों पर सजावटी ताख बने हैं। इनमें से बहुत ताखों में गच की मूर्तियाँ स्थापित हैं जैसी कि मुख्य मन्दिर की पाँचवे काल की इमारत में पायी गयी थीं। दूसरे काल के मन्दिर का गर्भगृह पूर्वानिमुख बना है। चैत्य के दक्षिण–पूर्वी कोने के सेहन में छोटे–बड़े कई आकार के उद्देशिक स्तूप बने हैं जैसे मुख्य मन्दिर के आंगन में पाये गये थे। ऐसा प्रतीत होता है कि चैत्य के दक्षिण, पश्चिम और उत्तर की दिशाओं में सुरक्षा के लिये एक अखंड चारदीवारी थी। मन्दिर के उत्तर और दक्षिण में ईंटों के बने दो मन्दिर हैं। इसमें से एक मन्दिर में

भूमि–स्पर्श–मुद्रा में आसीन गज की महाकाव्य बुद्धमूर्ति के चिह्न से शेष है। इस मुद्रा में बुद्ध भगवान हथेली को अन्दर की ओर करके अपने दायें हाथ से भूमि को छू रहे हैं।

मन्दिर संख्या 13 :–

मन्दिर स्थल 12 के उत्तर की ओर इसी पंक्ति में एक दूसरा वास्तु–मन्दिर स्थल–13 इस समय अत्यंत ध्वस्त दशा में है। इसकी बाहरी दीवार के कुछ अवशिष्ट अंशों से पता लगता है कि यह इमारत दो भिन्न–भिन्न कालों की रचना है। मन्दिर स्थल 12 की दीवारों की तरह इनमें से सुन्दर ताख, अर्धस्तम्भ आदि की सजावट थी। दूसरे काल की दीवारें जहाँ कहीं भी बची हैं, सादी ही दिखाई देती हैं। इस मन्दिर के चैत्य के पूर्व में एक बड़ा आँगन है और चैत्य के ऊपर अब भी मन्दिर खड़ा है और इसके अन्दर गच की महाकाव्य बुद्धमूर्ति के अंश अब भी शेष हैं। मन्दिर के गर्भगृह की दीवारें दो भागों में बनी थीं। गर्भगृह के चारों ओर प्रदक्षिणा–पथ में बिछा हुआ कंकर का फर्श अब प्रायः नष्ट हो चुका है।[16]

इस स्थल की सबसे विचित्र बात मुख्य इमारत के उत्तर में ईंटों की बनी धातु पिघलने की भट्ठी है जिसके अन्दर से जले हुए धातु के टुकड़ों और खंगर आदि के मिलने से पता लगा है कि यह भट्ठी धातु की ढालुआँ वस्तुएँ बनाने के लिये प्रयोग में आती होंगी।

मन्दिर स्थल 14 :–

मन्दिर स्थल 13 के ऊपर में एक और मन्दिर स्थल 14, इसी आकार और इसी नाप का है। बाहरी दीवारों से पता लगता है कि यह भिन्न–भिन्न काल की दो इमारतों का एक दूसरी पर आरोप है। बहुत स्थानों में सुन्दर उकेरी के काम वाली पुरानी दीवारों पर बाद में सादी दीवारें चिनी गयी थीं। उत्तरकाल की रचना में गर्भगृह के द्वार को ईंटों की ठोस चिनाई से तंग कर दिया गया था। गर्भगृह के अन्दर गच की महाकाय बुद्ध मूर्ति की आसन–सुबद्ध जाघें और 3 फुट ऊँचा सिर अब भी शेष है।

मन्दिर की अत्यन्त रोचक बात यह है कि इसकी कुर्सी में बनें ताखों में रंगीन चित्रकारी के चिह्न मिले हैं। नालन्दा में रंगीन भित्तिचित्र का केवल यही एक उदाहरण शेष है। चित्र का अवशिष्ट भाग बहुत खंडित है और इसमें केवल हिरन और शेर की आकृतियाँ ही दिखाई देती हैं।

मन्दिर स्थल 2 :–

मन्दिर स्थल 2 मन्दिरों की कतार एवं विहारों की कतार से अलग हटकर विहार स्थल संख्या 7 एवं 8 के पीछे उत्तर–पूर्व दिशा में अकेले स्थित है।[17] इस मन्दिर की खोज डी.बी. स्पूनर ने 1916 ई0 में की थी।[18] नालन्दा के उत्खनित अन्य मन्दिरों की योजना के विपरीत आकार एवं भू–विन्यास में यह मन्दिर विलक्षण है। हालांकि उत्खनन के दौरान मन्दिर का केवल निचला हिस्सा ही मिला है तथा ऊपरी भाग विनष्ट हो चुका है, परन्तु प्राप्त अवशेषों को देखकर लगता है कि यह मन्दिर भव्य रहा होगा। मन्दिर स्थल–2 नालन्दा का एक मात्र हिन्दू मन्दिर है, हिन्दू मन्दिर मिलना कोई आश्चर्य की बात नही है, क्योंकि नालन्दा तीनों ही धर्मों की तपस्थली रही है। उस मन्दिर को पत्थरघट्टी के नाम से जाना जाता है।[19] इस मन्दिर में प्रस्तर खण्डों का बहुतायत प्रयोग इसकी एक विशेषता है, क्योंकि नालन्दा के अन्य मन्दिरों में केवल ईटों का प्रयोग किया गया है। मन्दिर की यह विशेषता इसे नालन्दा के अन्य वास्तु अवशेषों से अलग करती है।[20]

मन्दिर का अधिष्ठान आयताकार है जिसके निचले भाग प्रस्तर के 211 मूर्ति फलकों द्वारा अलंकृत किया गया है जो कुर्सी मे बने आसन पर एक कतार में एक दूसरे के समान दूरी पर बड़ी कुशलता से लगाये गये हैं।[21] मन्दिर के पूर्वी तरफ प्रवेशद्वार के दोनो पार्श्वों में 20–20 मूर्ति फलक तथा अन्यतीन तरफ 57–57 मूर्ति फलक लगाये गये हैं। मूर्ति फलकों को अलग करने हेतु अलंकृत अर्द्धस्तम्भ बनाए गये है। मूर्ति फलकों के ऊपर तीन छज्जे बने थे जो अब कहीं–कहीं ही बचे हैं। छज्जे पर जल पक्षी एवं नर मस्तक जैसे छोटे–छोटे चैत्य अभिप्राय बने है। मन्दिर के मूर्ति फलको में कई तरह के दृश्य हैं कुछ दृश्य तो ऐसे है जो मनोरंजक एवं आश्चर्य में डालने वाले हैं। जैसे हंसों की आकृतियाँ, जिनके चोंच में मोतियों के गुच्छे लटक रहे हैं। कुछ स्त्री पुरूष की मिथुन आकृतियाँ भी है जो श्रृंगाररस पूरित अंग विन्यासों के कारण अत्यन्त मनमोहक है।[22] कुछ ऐसे मिथुन चित्र भी है जो शिव–पार्वती के चित्र प्रतीत होते है। जबकि किन्नर, गजलक्ष्मी, कुबेर तथा अग्निदेवता के चित्र भाव विभोर करने वाले है।[23] मृदंग बजाते हुये नर्तक तथा नृत्य मुद्रा में नार्तकी के चित्र देखने योग्य है। मन्दिर के फलक पर कही–कही कहानियों का भी अंकन है चित्र के माध्यम से है, जैसे की फलक पर 'कच्छप जातक' की कहानी का चित्र अंकित है। जो सम्भवतः भगवान बुद्ध की पूर्व जन्म की कथा से सम्बद्ध है तथा पंचतंत्र से भी मिलता है।[24] मन्दिर अधिष्ठान के प्रस्तर खण्डों पर प्राचीन ब्राह्मी लिपि के अक्षर भी खुदे हैं जो कारीगरों के सांकेतिक चिह्न जान पड़ते हैं।[25]

मन्दिर के निर्माण की तिथि को लेकर विद्वानों में मतभेद है, क्योंकि इसकी वास्तविक तिथि के सम्बन्ध में प्रमाणिक स्रोतों के अभाव हैं नालन्दा के पाल शासक देवपाल (815–854ई0) के समय में व्यापक रूप से भवन निर्माण का कार्य सम्पन्न हुआ था। इस आधार पर ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि इस मन्दिर का निर्माण भी इसी समय कभी हुआ होगा।

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट हेाता है कि यह मन्दिर पूर्व–मध्यकाल के हिन्दू वास्तुकला का सर्वोत्तम उदाहरण था। उस समय सम्पूर्ण देश में गुप्तकालीन मन्दिर वास्तु की लहर चल रही थी। सम्भवतः बौद्ध धर्म के ह्रास के कारण हिन्दू मन्दिरों की आवश्यकता पड़ी होगी जिसके फलस्वरूप इस मन्दिर का निर्माण किया गया।[26] यह मन्दिर निर्विवाद रूप से हिन्दू धर्म से सम्बन्धित है, परन्तु यह किस देवता को समर्पित था, यह स्पष्ट नहीं हो पाया है। वी.एस. अग्रवाल तथा कृष्णदेव इसे शिव मन्दिर मानते हैं।[27] जबकि परवर्ती गुप्त शासक आदित्यसेन के समय के शाहपुर प्रस्तर लेख के अनुसार सूर्य मन्दिर का बोध होता है परन्तु इससे यह सिद्ध नहीं होता है कि यह सूर्य मन्दिर है। साक्ष्यों के अभाव के कारण यह रहस्य ही बना है कि यह हिन्दू मन्दिर होते हुए भी यह किसी देवता को समर्पित है। संभवतः आने वाले दिनों में उत्खनन के फलस्वरूप प्राप्त साक्ष्यों से इस रहस्य का पर्दा फास होगा।

सरायटीला मन्दिर :–

यह मन्दिर भी मन्दिरों की कतार से अलग हटकर मन्दिर स्थल संख्या 2 के दक्षिण–पूर्व दिशा में थोड़ी ही दूरी पर स्थित है। यह मन्दिर भी बनावट में अन्य मन्दिरों से अलग नहीं लगता है।[28] इसका उत्खनन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग, मध्यपूर्वी अंचल, पटना के तत्वावधान में 1974–1982ई0 के मध्य हुआ।[29] उत्खनन से प्राप्त गर्भगृह के से मूर्ति पादपीठ पर बनी रंगीन चित्रकारियां इसकी महत्वपूर्ण विशेषता है जिसमें से अधिकांश नष्ट हो चुकी हैं तथा कुछ धुंधली हो गयी है, परन्तु जो बची हैं वे उल्लेखनीय हैं। चित्रकारियों में एक नृत्यांगना, दर्पण लिए एक स्त्री, एक उपदेशक, एक हाथी तथा एक घोड़े का चित्र आसानी से पहचाना जा सकता है। मन्दिर में पाषाण फलक लगे हैं। ऊपरी फलक पर बेलबूटे तथा नीचे के फलक पर जन्तुओं एवं मानवों की आकृतियां बनायी गयी हैं। इन आकृतियों को बनाने में लाल रंग का प्रयोग किया गया है। नालन्दा की चित्रकारियों का समय निर्धारित करना कठिन है। मन्दिर के पुरावशेषों एवं चित्रकारियों को देखने से लगता है कि मन्दिर काफी प्राचीन है जबकि उसमें बनाए गये चित्र बाद के हैं। मन्दिर से

प्राप्त पूर्ववर्मन के अभिलेख की तिथि 7वीं शताब्दी ई0 है जबकि बी.नाथ के अनुसार मन्दिर में बनी चित्रकारियां 10वीं–11वीं शताब्दी ई0 की हैं।[30]

इस शोध पत्र के माध्यम से नालन्दा कालीन मन्दिर समूह को अवगत कराना है कि नालन्दा न केवल शिक्षा का केन्द्र रहा बल्कि यहाँ के मन्दिर भारतीय वास्तुकला के अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। जिनके वास्तु का विकास गुप्तकाल से लेकर पाल काल तक हुआ। 13वीं शताब्दी ई0 के मध्य में नालन्दा अपनी आन्तरिक दुर्बलता, मुस्लिम आक्रमणों तथा जन समर्थन के अभाव में कमजोर हो गया एवं धीरे–धीरे खण्डहर में तब्दील हो गया। लेकिन खण्डहरों से प्राप्त अवशेष इसके भव्यता के द्योतक है। नालन्दा के पुरावशेषों में मन्दिल स्थल संख्या–3 सर्वाधिक भव्य, आकर्षक, विशाल एवं ठोस इमारत के द्योतक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. सिंह, बी.पी., भारतीय कला को बिहार की देन, बिहार राष्ट्र भाषा परिषद, पटना, 1958, पृ0–107
2. सिंह, प्रियसेन., भारत के प्रमुख बौद्ध तीर्थ स्थल, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली, 1993, पृ0–97
3. पेंग, जे.ए. जर्नल ऑफ दी बिहार रिसर्च सोसाइटी, अंक–1923, पृ0–17, शास्त्री, हीरानन्द., नालन्दा, पृ0–31
4. उपासक, सी.एस., नालन्दा पास्ट एण्ड प्रजेन्ट, पृ0–71
5. पाटिल, डी.आर., एन्टीक्वेरियन रिमेन्स ऑफ बिहार, पृ0–308–309
6. घोष, ए., नालन्दा, अनु.शास्त्री केदारनाथ, भारतीय पुरातत्व विभाग, नई दिल्ली, 1963, पृ0–18, मिश्रा, बी.एन., नालन्दा, भाग–तीन, पृष्ठ–229
7. घोष, ए., वही, पृ0–19
8. पेग, जे. ए., वही पृ0–131
9. वही, पृ0–130
10. पाटिल, डी.आर., वही–309
11. घोष, ए., वही, पृ0–19

12. मिश्रा, बी.ए., वही, पृ0–132

13. वही, पृ0–239

14. वही, पृ0–244

15. श्रीवास्तव, ए.पी., नालन्दा की स्थापत्य एवं मूर्तिकला, पृ0–58

16. घोष, ए., वहीं, पृ0–33

17. वही, पृ0–34

18. श्रीवास्तव, ए.पी., वही, पृ0–65

19. शास्त्री, हीरानन्द, नालन्दा, मैनेजर ऑफ पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1938, पृ0–28

20. पाटिल, डी.आर., वही, पृ0–326

21. शास्त्री, हीरानन्द, वही, पृ0–28

22. त्रिपाठी, हवलदार, बौद्ध धर्म और बिहार, पृ0–257, शास्त्री, हीरानन्द, वही, पृ0–29

23. उपासक, सी.एस., वही, पृ0–77

24. त्रिपाठी, हवलदार, वही, पृ0–258, शास्त्री, हीरानन्द, वही, पृ0–29–30

25. शास्त्री, हीरानन्द, वही, पृ0–30

26. श्रीवास्तव, ए.पी., वही, पृ0–68

27. अग्रवाल, वी.एस. एवं कृष्णदेव, दी स्टोन टेम्पुल ऐट नालन्दा, जर्नल ऑफ उत्तर प्रदेश हिस्टोरिकल रिसर्च सोसाइटी, अंक–1950, पृ0–198

28. उपासक, सी.एस., वही, पृ0–82

29. वही

30. नाथ, बीरेन्द्र, नालन्दा मुरल्स, कास्मो पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली 1983, पृ0–63